कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में क्रांति एवं विद्रोह

डॉ0 सुधा रानी*

सह आचार्य, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वैश्य महाविद्यालय, भिवानी, हरियाणा, भारत

Email ID: *drsudhachauhan1818@gmail.com*

Accepted: 07.04.2022 **Published**: 01.05.2022

मुख्य शब्दः जन जागरण, क्रांति एंव विद्रोह, पुनर्जागरण, राष्ट्रीय विचार।

शोध आलेख सार

जन जागरण की काव्यधारा को तीव्र और प्रखर बनाने वाले कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं, जिन्होंने प्रारम्भ से ही ओजस्विता एवं तेजस्विता से परिपूर्ण काव्य की रचना की, जिनके काव्य में योद्धा का गंभीर घोष और अनल का सा प्रखर ताप है और सूर्य का सा प्रखर तेज है। इसीलिए दिनकर जी को 'अनल' का कवि जाना जाता है। दिनकर जी के समस्त काव्य में अपने युग की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि समस्याओं की अपेक्षा देष की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति एंव विद्रोह के लिए सिंहनाद करने वाली पुनर्जागरण करने की भावना को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

भूमिका :–

दिनकर जी की 'हुंकार' रचना में यौवन की हुंकार भरी है, उसमें क्रांति का अथाह सागर हिलोरें मार रहा है। यह काव्य कवि के राष्ट्रीय विचारों से परिपूर्ण ऐसी ओजस्वी रचना है, जिसमें विप्लव, क्रांति एवं विद्रोह की अनल प्रज्वलित हो रही है। इसी में कवि ने अपने को ज्वलित सौर–मण्डल का ज्योतिर्धर कवि स्वीकार किया है, जिसकी अरूणाभा षिखण्ड है और जो अनल का किरीट धारण किए हुए है–

''ज्योतिर्धर कवि मैं ज्वलित सौर मण्डल का,
मेरा षिखण्ड अरूणाभ, किरीट अनल का।''1

बलिदान और क्रांति के ज्योतिर्धर कवि दिनकर के काव्य में इतिहास अपनी सम्पूर्ण वेदनाओं को लेकर कराह रहा है। कवि दिल्ली के पूर्व गौरव, मुस्लिम युग की उत्कर्ष संस्कृति, वीर पात्रों, ऐतिहासिक स्थानों की स्मृतियों को ताजा करते हुए भारतवासियों को उनके पतन से सचेत करता है। जो दिल्ली वैभव की दीवानी है, कृषक मेघ की रानी है, अनाचार, अपमान और व्यंग्य की कहानी है, जो अपने ही पति की समाधि पर इतराती है

और ब्रिटिष सत्ताधारी परदेषियों के साथ गलबॉही देने में फूली नहीं समातीः–

''वैभव की दीवानी दिल्ली!
कृषक मेघ की रानी दिल्ली।
अनाचार अपमान, व्यंग्य की
चुभती हुई कहानी दिल्ली।
अपने ही पति की समाधि पर
कुलटे! तू छवि में इतराती
परदेषी संग गलबॉही दे
मन में फूली न समाती।''2

भारत के अतीत गौरव के स्तम्भ काषी, प्रयाग, पानीपत, चित्तौड़ कवि को भारत की भव्यता की स्मृति दिलाते हैं। एक युग में अत्यन्त सामर्थ्यषाली, वैभवपूर्ण एवं गौरवषाली मगध साम्राज्य रहा है। आज जब वही मगध मिट्टी में सो रहा है तो कवि करूणा के अश्रु बहाकर भिखारिणी मिथिला का चित्रण प्रस्तुत करता है–

''पैरों पर ही है पड़ी हुई
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूंछ कहां इसने खोई,
अपनी अनन्त निधियाँ सारी।''3

दिनकर जी ने भारत की दयनीय स्थिति को देखकर गर्वोन्न्त हिमालय के माध्यम से अपनी क्रांति की भावना को व्यक्त किया है कवि हिमालय को सम्बोधित करता हुआ कहता है–

कह दें षंकर से आज करें
वे प्रलय–नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर–हर बम का फिर महोच्चार।''4

राष्ट्रीय जागरण की भेरी बजाने वालों में दिनकर जी का स्वर अत्यन्त प्रबल एवं सषक्त रूप में मुखरित हुआ है। उन्होंनें भारतवासियों के प्राणों में उस युग में जागरण का मंत्र फूंका था, जब वह युद्ध के प्रभाव से विजड़ित और पराधीनता की श्रृंखलाओं से आबद्ध था। उस समय दिनकर जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा था–

'म्रियमाण जाति को प्राण किया करता हूँ
पीयूष प्रभा–मय गान दिया करता हूँ,
जो कुछ ज्वलन्त हैं भाव छिपे नर–नर में,
है छिपी विभा उनकी मेरे खर शर में।''5

वीर जवानों को उत्तेजित करे हुए कवि लिखता है–

''जागरूक की जय निष्चित है, हार चुके सोने वाले,
लेना अनल–किरीट भाल पर ओ आषिक होने वाले।
बेफ्रिकी का समां कि तूँफा में भी एक तराना है,
अभय बैठा ज्वालामुखियों पर अपना मंत्र जगाते हैं।''6

भारतीय परतंत्रता की बेड़ियों को काटने हेतु ज्यों–ज्यों आगे बढ़ रहे थे, विदेषी शासक की दमन नीति उतनी हीं उग्रतर होती जा रही थी। इस दमन नीति की प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय युवकों के हृदय में विद्रोह की ज्वाला और भी भयावह रूप धारण करती रही। वे दिनकर की हुंकार में 'हुंकार' उठे–

''पौरूष को बेड़ी डाल पाप
का अभय रास जब होता है,
ले जगदीष्वर का नाम
खड्ग कोई दिल्लीष्वर धोता है,
धन के विलास का बोझ
दुखी दुर्बल दरिद्र जब ढ़ोता है,
दुनियाँ को भूखों मार भूप
जब सुखी महल में सोता है,

स्हती सब कुछ मन मार प्रजा, कसमस करता मेरा यौवन।'7'

दिनकर की कविताओं में वर्ग–वैषम्य की मार्मिक झांकियाँ भी मिलती हैं। कवि को यह असहय है कि कुत्तों को दूध मिले और नन्हें–मुन्ने भूख से तड़फें। पूंजीपतियों का यह अत्याचारी रूप कवि ने बड़ी सफलता के साथ चित्रित किया है। वर्ग–वैषभ्य की यह स्थिति कवि को क्रांति के लिए प्रेरित करती है–

''ष्वानों को मिलते दूध वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,

माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़ों की रात बिताते हैं।

युवती के लज्जा वसन बेच, जब ब्याज चुकाये जाते हैं,

मालिक जब तेल–फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते हैं।''8

''हाहाकार' शीर्षक कविता में शोषण के भयंकर रूप का चित्रण किया है। इस वैषम्य को समाप्त करने के लिए कवि ने क्रांति का शंख बजाया है। निम्नलिखित पंक्तियों को सुनकर सहृदयों के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगती है। ये पंक्तियाँ अत्यन्त मार्मिक एवं मर्मस्पर्षी हैं, जिनमें कृषकों की कारूणिक स्थिति का चित्रण है–

'जेठ हो कि पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है,

छुटे कभी संग बैलों का,ऐसा कोई याम नहीं है।

मुख में जीभ, शक्ति भुज में, जीवन में सुख का नाम नहीं है,

वसन कहाँ ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है।''9

कवि ने बच्चों के मार्मिक चित्रण के द्वारा पूँजीवाद की विभीषिका के प्रति क्षोभ व्यक्त किया है, जो अत्यन्त हृदय द्रावक दृष्य उपस्थित करता है–

''पर, षिषु का क्या हाल, सीख पाया न अभी जो आंसू पीना ?

चूस–चूस स्तन माँ का सो जाता रो–विलप नगीना।

विवष देखती माँ, अंचल से नन्हीं जान तड़प उड़ जाती,

अपना रक्त पिला देती यदि फटती आज वज्र की छाती।''10

दिनकर की 'रेणुका', 'हुंकार', 'कुरूक्षेत्र' में क्रांति की भावना अपना प्रबलतम रूप धारण कर व्यक्त हुई है। कवि की धारणा है कि भारत के दलित, गलित समाज का पुनरूत्थान क्रांति से ही हो सकता है। 'रेणुका' की 'तांड़व', 'हुंकार' की 'विपथगा' और 'सामधेनी' की 'जवानियाँ' सर्वश्रेष्ठ कविताएँ हैं। 'ताँडव' में पुरूष का ओज है तथा 'विपथगा' में नारी की शक्ति है। 'विपथगा' की सम्पूर्ण कविताएँ एक धधकती हुई चिता है, जिसमें अत्याचार के शव चट–चट जलते हैं। 'विपथगा' में कवि ने क्रांति की प्रचण्ड़ शक्ति और तीव्रतम आवेष का ज्वलंत चित्र अंकित किया है। देष की दुर्दषा, दुराचार, अत्याचारों का चित्रण 'विपथगा' में सफलता के साथ अंकित किया गया है।

दिनकर जी की 'कुरूक्षेत्र' रचना तेजस्विता, वीरता का संदेष देती है। दिनकर ने 'कुरूक्षेत्र' काव्य में पूंजीवादी समाज व्यवस्था पर भीष्म पितामह के शब्दों में डंटकर प्रहार किया है। आर्थिक वैषम्य में

धरती के गायक दिनकर को क्रांति की ध्वनि सुनाई देती है। इस विषमता के लिए हिंसात्मक मार्ग की स्वीकृति राष्ट्रीय संघर्ष के वातावरण में पल्लवित हुई है। कवि अपनी ओजस्वी वाणी में वर्ग वैषम्य का उपचार सुझाता है :–

रखा रोकना है तो उखाड़ विषदन्त फेंको,
वृक व्याघ्र नीति से मही को मुक्त कर दो।
अथवा अजा के छागलों को भी बनाओं व्याघ्र,
दांतों में कराल काल कूट विष भर दो।''11

इन पंक्तियों में 'अजा छागल' शोषण की चक्की में पिसने वाला सर्वहारा वर्ग, वृक और व्याघ्र क्रूर सत्ताधारी पूँजीपति वर्ग हैं।

युद्ध का कारण भी पूँजीपतियों की धन–लिप्सा है। धनी वर्ग जनसाधारण का शोषण करता है और अपमान करता है। इस अहंकार, अन्याय और शोषण की प्रतिक्रिया स्वरूप जनसाधारण का हृदय घृणा और प्रतिषोध की भावना से भर आता है और वह अपने हितों की रक्षा के लिए अस्त्र उठाता है और भीषण नरसंहार होता है। इस युद्ध का उत्तरदायित्व पूंजीपतियों पर ही होता है। स्थायी शांति की स्थापना केवल साम्यवादी समाज व्यवस्था में ही संभव है।''12

''रष्मिरथी' में कवि ने युग–युग से शोषित, प्रताड़ित एवं पद–दलित वर्ग के चरित्र को उन्नत करके नूतन मानवता की प्रतिष्ठा में अत्यधिक सहयोग दिया है।

दिनकर जी आर्थिक साम्य के उपासक हैं। उनकी धारणा है कि जब तक समता नहीं आती, तब तक वसुन्धरा पर हरियाली नहीं आयेगी :–

''साम्य की रष्मि स्निग्ध, उदार,
कब खिलेगी, कब खिलेगी, विष्व में भगवान।
कब सुकोमल ज्योति से, अभिसिप्त,
हो सरस होंगे जली–सूखी रसा के प्राण ?''13

दिनकर जी की कविताएं जन–जीवन की शौर्य, पराक्रम एवं वीरता से परिपूर्ण कविताएँ हैं, जो रग–रग में तप्त अनल धधकाकर मानवों को त्याग और बलिदान के मार्ग पर ले जाने वाली हैं जो हृदयों में जोष और उमंग के शोले जलाकर अन्याय, अनाचार और दुराचार के प्रति विद्रोह एवं क्रांति की प्ररेणा देने वाली हैं जो परम्परा एवं रूढियों के कूड़े–कर्कट को खत्म करके नूतन युग का आह्वान करने वाली हैं और जो स्वार्थपरता और प्रलोभन में लिप्त भारतीयों के हृदयों में स्वदेष प्रेम की भावना को जाग्रत करने वाली हैं। दिनकर की लेखनी में शक्ति और विस्फोट की ज्वाला है। क्रांति का ऐसा सजीव और मूर्त चित्र आलोक्ति करने वाले दिनकर को युग धर्म की हुंकार कहें तो अत्युक्ति न होगी।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'परषुराम की 'प्रतीज्ञा', 'रेणुका', 'सामधेनी', 'कुरूक्षेत्र', 'रष्मिरथी', 'इतिहास के आँसू', आदि समस्त काव्यों में दिनकर जी ने अपने युग की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, समस्याओं की अपेक्षा देष की स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु क्रांति एवं विद्रोह का सिंहनाद करते हुए, जन जागरण की भावना को अत्यधिक महत्त्व दिया है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. हुंकार, दिनकर, पृ0 14
2. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, दिनकर, पृ. 57
3. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, रेणुका, दिनकर, पृ. 47

4. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, रेणुका,दिनकर, पृ. 47–48
5. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, दिनकर, पृ. 60
6. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, दिनकर, पृ. 64–65
7. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, हुँकार, दिनकर, पृ. 65–66
8. कुरूक्षेत्र, दिनकर, पृ. 94
9. कुरूक्षेत्र, दिनकर, पृ. 19–25
10. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, दिनकर, पृ. 33